

New Sutras and corrections of Sutras -according to "Jyotish Pradipika"

Of Lakshmana Sastry's Sanskrit Commentary.

Sampath kumar Medavarapu

Andhra Pradesh

In this paper I want to reveal some important points in Jaimini Upadesa Sutra. Comparative study also have been taken between Sanskrit commentaries of Neelakanta's Subodhini and Lakshmana Sastry's JyothisPradipika{ Here after JP}. Subodhini translated in to every Indian language along with English. But JS is not properly studied by our Sanskrit scholars. Because it is in Telugu script. I have been scribing this JP in Devanagari script.

Lakshmana Sastry is a Telugu Brahmin ,probably in 17th century, hailed from Vatheeswaran koil in Tamilanadu, son of Visveswara Sastry. This information given himself at the end of thefirst quarter of first Chapter. This Sanskrit commentary is scribed in Telugu Language.

अग्रगण्य स्त वैद्यनाथभक्त विश्वेश्वरशास्त्रि तनूज लक्षमणशास्त्रि कृतायां "ज्योतिः प्रदीपिकाख्यायां" जयम्नि

{ जैमिनि}सूत्रवृत्त [?] शास्त्रसंहितायां प्रथमाध्यायस्य प्रथमपादः।

Lakshmana Satry's Jyothis Pradipika Manuscript taken from Saptarishis Atrology. Thanks to SA Team

JP deal with 2 Chapters only. Firstly Commentator Lakshmana write down all Sutras of 2 Chapters. After that he started the JP commentary. First I verify the aphorisms of 2 chapters.

He mentioned all aphorisms of 2 chapters and omitted some Sutras which are incorrect and interpolated at that time.

Example- तस्य पिता- 1-1-16: This Sutra mentioned in Sutra list ,but omitted in commentary.

I found these remarks in the JP

- 1- New Sutras.
- 2- Words arrangement of Sutra also differed in some places.
- 3- In some places one Sutra divided in to tow Sutras.
- 4- Some words are changed , but their value of the कटपय is not changed. Example 1-1-7
- 5- The order of the Sutras are not same in little bit of places

| No | Sutra of Subodhini | JyotishPradipka | Remarks |
|-----|-------------------------------------------|----------------------------------------------|----------------------------------------|
| I | रिःफ नीच कामस्थाः विरोधिनः-1-1-7 | तपनीचकामस्थाः विरोधनः | value of the कटपय is not |
| | | | changed |
| 2 | शुक्रदृष्टं दीक्षितः 1-2-33 | शुक्रकुजदृष्टे दीक्षितः | Changed the meaning |
| 3 | शुभ दृष्टे स्थेयः 1-2-40 | शुक्र दृष्टे स्थेयः | Changed the meaning |
| 4 | कुजकॆतुभ्यां ऐष्टिकम् 1-2-45 | कुजकेतुभ्यां गुरुद्रोहः | Changed the meaning |
| 5 | समेगुरौ विशेषेण 1-2-67 | नवमेगुरौ विशेषण | Changed the meaning |
| | | पापैरन्यथा | Mentioned as single Sutra |
| 6 | Not mentioned in any Text | चन्द्रदृष्टौ श्वित्री | New Sutra |
| 7 | Not mentioned in any Text | तत्र मृत्यौ वा कुज-राहुभ्यां क्षयः | New Sutra |
| 8 | सभाजडः शनिना 1-2-109 | सबाजयः शनिना | Mentioned as second version of Sutra - |
| 9 | गुरुणा करमूलात् 1-3-30 | गुरुणा कर्म मूलात् | Changed the meaning |
| 10 | उच्चेन वा १-३-१६ | उच्चे नवांशेनाऽपि | Changed the meaning |
| 11 | कर्मदासयोः पापयौश्व 1-3-31 | कर्मदासयोः <mark>पापग्रह</mark> पापयोश्च | Changed the meaning |
| 12 | अस्थिसावौ बुध-कॆतुभाम् 1-4-14 | अस्र स्रावॊ बुध-कॆतुभाम् | अस्र means Blood |
| 13 | Not mentioned in any Text | श्विमात्रेण मृतः प्रजः | New Sutra |
| 14 | नाऽत्र पापात् १-4-45 | नाऽत्र पापी <mark>शुक्रः</mark> | Changed the meaning |
| 15 | पापाभ्यां योगॆ स्वस्य तयोर्वा ततः | पाताभ्यां योगे स्वस्य | Some books mentioned it |
| | 2-1-48 | तयॊर्वा ततः | |
| 16 | ब्रह्मा स्वभावेशो भावस्थः 2-1-52 | ब्रह्मा स्वभावेशो महेश्वरः भावस्थः | Changed the meaning |
| 17 | प्रथमॆ प्राक् प्रत्युक्तम् 2-4-8 | प्रथमॆ पराक् प्रत्यग्वा | |
| 18 | पित्-मातृधर्म-प्राण्यादिस्त्रिकॉणॆ 2-4-24 | पितृ-मातृ <u>धन</u> | value of the कटपय is not |
| | - C C | प्राण्यादिस्त्रिकोणे | changed |
| 19 | घासगैरिकात् पत्नीकरात् कारकैः | तद् भावपति तत्कारकैः | Changed the meaning |
| | फलादॆशः 2-4-26 | फलादॆशः | |
| 20- | शुभदशा शुभयुतॆ धाम्नयुच्चॆ वा | शुभदशा शुभयुतॆ | Changed the meaning |
| | 2-4-35 | <u>स्वाम्युच्च</u> े वा | |
| 21 | अप्राण्यपि पापदष्टः २-२-३ | अप्राणिनि पापदष्टः | Changed the meaning |
| 22 | मिश्री मिश्रमम् 2-2-14 | मिश्रे मिश्रम् | Meaning is same |
| 23 | गुरुणाशॉफारुचि वमनायैः 2-2-21 | गुरुणा ऽशौभाऽरुचि | There is अकार प्रश्लेषा , |
| | | वमनाद्यैः | Meaning is changed |

| 24- | शशिनन्दपावकाःक्रमादब्दाःस्थिरदशायाम् | शशि- <mark>मन्द</mark> -पावकाः | Meaning is same |
|-----|----------------------------------------------------------|---------------------------------------------------------------------|-----------------------------------------------------|
| ` | 2-2-3 | | |
| 25- | अथ प्राणः 2-3-5 | अथ प्राणः स्वामिनः | Strength of the Asc lord reiterated. |
| 26 | साम्ये भूयसा २-३-७ | साम्ये भूयस्त्वम् | Meaning is same |
| 27 | निसर्गस्ततः 2-3-9 | निसर्गतस्ततः | Grammatical correction |
| 28 | आग्रायतॊऽत्र विशेषात् २-3-11 | आश्रयतॊऽत्र विशेषात् | Rectified the meaning and Grammatical correction |
| 29 | स्यात् स्वामिनः कण्टकादिष्वपार दौर्बल्यम् 2-3-16 | स्यात् स्वामिनः कण्टकादिषु <mark>पाद</mark> दौर्बल्यम् 2-3-16 | Changed the meaning |
| 30- | पितृलाभपुत्र प्राण्यादिः पितुः २-३-१९ | पितृलाभ पुत्रयौः प्राण्यादिः पितुः 2-3-19 | Changed the meaning |
| 31 | चापचन्द्रॆ शुक्रदृष्टॆ पाण्डुश्वित्री 1-2-88 | चापचन्द्रॆ शुक्रदृष्टॆ श्वित्री 1- 2-88 | पाण्डु not mentioned |
| 32 | तत्राप्याद्यखर्शनाथ दृश्य नवभागाद्वा 2-1-34 | तत्राप्याद्यखर्शनाथ दृश्य नवभागाब्दे | Changed the meaning |
| 33 | मन्द-मान्दिभ्यां विष-सर्प- जलोद्वंध्नादिभिः2-1-48 | राहु-मान्दिभ्यां विष-सर्प- जलोद्वंध्नादिभिः | Changed the meaning |
| 34 | चन्द्र-मान्दिभ्यां पूगमदान्नकवलादिभिः क्षणिकम् २-२-२१ | चन्द्र-मान्दिभ्यां पूग मन्दान्न कवलादिभिः क्षणिकम् | Changed the meaning |
| 35 | मिश्रॆ विलम्बात् पुत्रः 1-4-27 | मिश्रे विलम्बात् पुत्रलाभः | |
| 36 | पापदग्योग स्तुंगादिग्रहयोगः | पापदग्योग स्तुंगादिग्रह संयोगःचत्वारः | Not Changed the meaning |
| 37 | उच्चग्रहॆsपि 1-2-43 | उच्हग्रहॊ <mark>वा</mark> | Result will be optional |
| 38 | भग्रहयोगोक्तं सर्वमस्मिन् 2-4-6 | भग्रहयोगोक्तं सर्वमस्मिन् पापग्रयोक्तम् | Changed the meaning |

So far all translators of Jaimini Sutras not properly verified Sanskrit commentaries, except Subodhini which is not purely understood by the author itself, because of Somanatha's "JyothisKalpalata", In some places कटपय also wrongly interpretated, but there are 4 to 5 other commentaries are in Sanskrit. For full explanation and decoding the real meaning of Jaimini only can be understood, when patiently – grammatically- scholarly- intuitively deciphered. Those days also will come in future.

Good-luck